भूमिका

कवि रामधारीसिंह दिनकरजी का " कुरूक्षेत्र " आधुनिक हिंदी-साहित्य की महत्तम काव्यकृतियों में से एक हैं। वह रमणीय अर्थ का प्रतिपादक है, उदात्त विचारों का प्रेरक हैं एवं प्राणवत्ता की दृष्टि से अपना विशिष्ट स्थान रखता हैं।

दिनकरजी केवल " कुरूक्षेत्र " लिखकर और कुछ न लिखते तो भी उनकी हिंदी के अन्य श्रेष्ठ कवियों की श्रेणी में गणना हों जाती।

दिनकरजी ने कुरूक्षेत्र में समस्त मानव जाति के सामने जो युद्ध की समस्या पुराणकाल से आजतक बनी हैं उसका समाधान प्रस्तुत किया हैं। और उनका यह विश्वकल्याण का विचार ही मुझे कुरूक्षेत्र की ओर आकर्षित करता हैं। उसमें न केवल भारतवासियों के लिए बल्कि विश्व को नजर अंदाज करते हुए कवि ने अपने विचार प्रस्तुत किए हैं।

किसी कवि की कृति का अध्ययन करने से पूर्व हमें उनका जीवन मालूम होना नितांत आवश्यक होता हैं। क्योंकि उनके जीवन का प्रभाव उनकी कृतिपर होता हैं। इसलिए यहाँ प्रारंभ उनके जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व से किया गया हैं। बाद में कृति लिखते समय उनपर कौनसे प्रभाव दिखाई पड़े वे प्रस्तुत किए गए हैं।

कवि ने यहाँ जो पात्र लिए हैं वे पौराणिक हैं। फिर भी उन पौराणिक पात्रों के माध्यम से उन्होंने अपने मूल विचार युद्ध की समस्या का समाधान ही प्रस्तुत किया हैं।

किसी कृति की आलोचना करते समय हमें उसके भावपक्ष तथा कलापक्ष दोनों को देखना पड़ता हैं। इस दृष्टि से " कुरूक्षेत्र " में दोनों का शिल्प विधान में विचार किया गया है।

महान तथा कुशल कवि वही हैं जिसके काव्य में कलापक्ष तथा भावपक्ष दोनों समान रूप से उत्कृष्ट हों। कुरूक्षेत्र इस दृष्टि से एक सफल काव्य हैं क्योंकि इसमें कलापक्ष तथा भावपक्ष दोनों का निखार दर्शनीय हैं। " कुरूक्षेत्र " जैसी विचार-प्रधान कृति को पढ़ने से हमें सत्काव्य का जो आनंद मिलता है उसका

प्रधान कारण उसमें व्यंजित संचारी भाव तथा ओज, प्रसाद, माधुर्य आदि गुण हैं जो आरंभ से अंततक कृति को सरस बनाए रखते हैं।

शैलियों की प्रचुरता के कारण कुरूक्षेत्र रस-प्रतिपादक कृति न होकर भी आद्यंत सरस कृति होती हैं।

कवि अपने युग का प्रतिनिधि होता हैं। उसका व्यक्तित्व एवं कृतित्व युगीन परिस्थितियों से प्रभावित होता हैं। स्वभावत: दिनकरजी की समग्र काव्यरचना में युग का प्रतिबिंब हैं।

राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना में कवि ने देश के प्रति ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय धरातल पर उन्होंने अपने विचार इस काव्यद्वारा व्यक्त किए हैं। इसमें समाजपर होनेवाले अत्याचारों का प्रतिकार करने का विचार कवि ने प्रस्तुत किया हैं। साथ ही भारतीय संस्कृति का भी गहरा प्रभाव उनकी कृतिपर हमें दिखाई पड़ता हैं। उसमें हमारी सांस्कृतिक बुद्धि को झकझोर देनेवाली शक्ति हैं। मानवतावादी दृष्टिकोण से संपन्न होने के कारण वह हमें मानव-मानव के दृश्यमान अंतर का उच्छेद करके उसकी एकता अखंडता से साक्षात्कार करने की प्रेरणा देता हैं।

उनका दृष्टिकोण सर्वथा उदार एवं व्यापक है अत: किसी भी मानवोपयोगी दृष्टिकोण का इस बात को भूलकर कि वह किस वर्गविशेष से संबद्ध है उसने सहर्ष स्वागत किया हैं। दिनकरजी भारतीय संस्कृति के आख्याता रहें हैं। दिनकरजी ने जिस भारतीय संस्कृति को अपनी काव्यचेतना का अंग बनाया है उसमें हिंदुत्व का कंपन है क्रांति का शैवाल है, स्वर्ग का भूमीकरण और भूमि का स्वर्गीकरण भी।

" कुरूक्षेत्र " में कविद्वारा प्रस्तापित समता और प्रेम की भावनाओं से स्पष्ट होता है कि दिनकरजी का युद्धसंबंधि द्वंद्व समाधान पा चुका हैं। वह संसार की कल्मषता को धोने के लिए युद्ध का स्वीकार अवश्य करता है। परंतु सुख और समृद्धि के लिए शांति का महत्त्व ही स्वीकार करता हैं।

" कुरूक्षेत्र " अपने समय और समाज के प्रति जागृति का संदेश देनेवाला समन्वय की भूमिपर स्थित काव्य हैं, जहाँ युद्ध की अनिवार्यता धर्म एवं शांति के मंगल की शुभकामना तन्निहित हैं।

" कुरूक्षेत्र " का प्रतिपाद्य भी विश्वकल्याण है, राष्ट्रकल्याण मात्र नहीं।

" कुरूक्षेत्र " का महत्त्व का संदेश हैं भारतवासियोंके समक्ष युद्ध की आवश्यकता एवं औचित्य सिद्ध करके उन्हें युद्ध की प्रेरणा देना।

इसप्रकार दिनकरजी ने अपनी इस महत्तम कृतिद्वारा मानवजाति के लिए उनके स्वत्व के रक्षण के लिए युद्ध अनिवार्य एवं आवश्यक बतलाया है, साथ-ही-साथ विश्वकल्याण की भी मंगल-कामना व्यक्त की हैं। यहीं बात हमें कृति की इस कृति की ओर आकृष्ट करती हैं।

कवि दिनकरजी के " कुरूक्षेत्र " का अध्ययन करते समय मुझे डॉ. सुर्वेजी ने बड़ी सहायता प्रदान की अत: मैं उनका ऋणी हूँ। मेरे निर्देशक प्रा.डॉ.राजेंद्र शाह जी अपने कार्यभार में व्यस्त होते हुए भी मुझे समय समय पर प्रेरणा तथा मौलिक सूचनाएँ देते रहें। उनके मार्गदर्शन के कारण ही यह लघुशोध प्रबंध कार्य मैं पूरा कर सका हूँ। अत: मैं उनके ऋण से उऋण नहीं हो सकूँगा। इस ग्रंथ की जो भी मौलिक उद्भावना होगी वह मेरे निर्देशक प्रा.डॉ.शाहजी की प्रेरणा हैं, साथ ही जो कुछ त्रुटियाँ होगी वह मेरे अल्पज्ञान की सीमा होगी।

मैं फलटण एज्युकेशन सोसायटी के सेक्रेटरी मा. श्रीमंत शिवाजीराजे नाईक निंबाळकर तथा मेरे पितासमान ससुर मा. श्री.बुवासाहब ना. निंबाळकरजी का भी अत्यंत आभारी हूँ, जिन्होंने मेरी हरतरह से सहायता की। मुधोजी कॉलेज के प्राचार्य मा. देशमुख सर जी का तथा मुधोजी कॉलेज के हिंदी विभागाध्यक्ष प्रा.श्रीवास्तव जी का भी आभारी हूँ जिन्होंने मुझे सदैव इस कार्य के लिए उत्तेजना दीं। साथ ही मुधोजी हाईस्कूल के इष्टमित्रों का भी आभारी हूँ जिनकी शुभेच्छा से यह लघुतर कार्य मैं संपन्न कर सका। विशेषातर प्रा. चोरमलेसरजी तथा श्री.सादीक तांबोळी का मौलिक सहकार्य रहा, जिनका मैं ऋणी हूँ।

मुधोजी कॉलेज के ग्रंथपाल श्री.जी.जी.पवारजी का विशेष आभारी हूँ जिन्होंने मुझे कई मौलिक ग्रंथ उपलब्ध करायें। साथ ही एल्.बी.एस्. कॉलेज के प्राचार्य अमरसिंह राणे, प्रा.टी.आर.पाटील तथा ग्रंथपाल और सेवकों का विशेष आभारी हूँ।

मैं सौ. शोभना खिरे जी, क्वालिटी सायक्लोस्टाईलिंग, सातारा का आभारी हूँ। जिन्होंने कम समय में लघु-शोध प्रबंध का अच्छा टंकन किया हैं।

इस लघु-शोध प्रबंध कार्य में सहायक हुए सभी लोगों का नामनिर्देशन करना संभव नहीं। फिर भी उन सब के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

आपका क्षमाप्रार्थी,

(प्रा. रणवरे यू.व्ही.)